रजि. नं. 144/जयपुर/2008-09 मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ

(संचालित मनु सोशियल वेलफेयर एण्ड एज्यूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रुपनगढ, अजमेर–305814

E-Mail Id: - svmmcollege.roopangarh@gmail.com

www.svmmcollege.in

Unit Wise

Notes

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय
रूपनगढ (अजमेर) राज.

पं. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित पन सोशियल वेलफेयर एण्ड एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814
E-mail : info.bidevanda@yahoo.com

धर्म और दर्शन

धर्म एक आध्यात्मिक चेतना है। इसे आत्मा का विज्ञान माना गया है। यह दैवीय सिद्धांत नहीं है।

भारतीय संस्कृति मे धर्म का अर्थ अंग्रेजी शब्द Religion शब्द से अलग माना गया है। धर्म का अर्थ धारण करने के विचार से प्रेरित क्रिया एवं व्यवहार माना गया है इस दृष्टि से धर्म किसी वस्तु का वह मूल तत्व है जिसके आधार पर उस वस्तु की यथार्थता (सत्यता) को समझा जा सकता है।

वैशेषिक दर्शन मे कहा गया है कि 'जिससे इस लोक मे अभ्युदय (स्वयं का उत्थान) लौकिक उन्नति और परलोक मे परम कल्याण की प्राप्ति हो वह "धर्म" है।'

'शास्त्र से अनुशासित या स्वीकृत कर्म या आचरण पद्धति को भी धर्म कहा गया है।'

धर्म निरंतर परिवर्तित रहने वाला अनुभव है। नैतिकता व आचार नीति (व्यवहार नीति) भी धर्म पर ही आधारित होती है इसी लिए धर्म की सटीक रूप मे व्याख्या कर पाने संभव नहीं है। धर्म को शाब्दिक परिभाषा मे बांधा नहीं जा सकता।

यही कारण है कि विद्वानो ने धर्म के अनेको स्वरूप बताये है।

Scanned with OKEN Scanner

A. वैदिक धर्म

वैदिक काल का अर्थ ऋग्वैदिक और उत्तर वैदिक दोनों के संयुक्त के लिए कहा जाता है।

a. ऋग्वैदिक धर्म → 1500 B.C. - 1000 B.C

विशेषताएँ :- • यज्ञ का अस्तित्व था लेकिन प्रार्थना प्रमुख

- व्यवहारिक एवं उपयोगिता मूलक
- भौतिक सुखो से प्रेरित
- प्रवृतिमार्गी जीवन जीये, निवृतिमार्गी नही
- मंदिर का अभाव
- मूर्ति पुजा का अभाव
- 33 देवताओ की ऋग्वैदिग / ऋग्वेद मे चर्चा
- स्वर्ग - नरक की कल्पना नही है (इह संकल्पना x)

b. उत्तर वैदिक धर्म → 1000 BC - 600 BC

उत्तर वैदिक काल मे धार्मिक जीवन बहुत जटिल हो गया। इस समय यज्ञ, अनुष्ठान एवं कर्मकांड का वर्चस्व बढ़ गया। इसी समय आरण्यक व उपनिषद के माध्यम से इसी काल मे प्रतिक्रिया भी हुई।

- यज्ञ मे मंत्रो के उच्चारण की शुद्धता पर बल दिया जाने लगा। शुद्ध उच्चारण ब्राह्मण ही जानते थे इसी लिए ब्राह्मणो का महत्व बढ़ गया।
- यज्ञो मे 16-17 ब्राह्मणो की आवश्यकता होने लगी
- इन यज्ञो मे बलि व दक्षिणा की मांग बढ़ने लगी।
- बलि का प्रभाव कृषि पर पड़ा। राजा निरंतर युद्ध के लिए राजस्व की मांग करने लगा, इसी पृष्ठभूमि मे ब्राह्मण व क्षत्रिय का अंतर संघर्ष प्रारंभ हो गया

Scanned with OKEN Scanner

शतपथ ब्राह्मण में क्षत्रियों को ब्राह्मणों से श्रेष्ठ बताया गया।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उत्तर वैदिक कालीन धर्म अब प्रार्थना मूलक नहीं रहा। कर्मकांड की जटिलता बढ़ गयी यही कारण है कि 600 B.C. धार्मिक क्रांति हुई।

{Que. वैदिक धर्म की व्याख्या करते हुए ऋग्वैदिक व उत्तर वैदिक धर्म के अंतर को रेखांकित करे}

⇒ धर्म व दर्शन में अंतर :-

धर्म	दर्शन
1. धर्म एक व्यवहारिक अवधारणा है।	दर्शन का मूल स्वरूप सैद्धांतिक है।
2. धर्म चेतना युक्त दृष्टि को साकार बनाने पर बल देता है।	दर्शन दृष्टि निर्माण करने की चेतना निर्मित करने पर बल देता है।
3. धर्म जीवन जीने का सही मार्ग बताता है।	दर्शन सत्य / वास्तविकता के प्रति उचित दृष्टि प्रदान करता है।

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय दर्शन :-

भारतीय दर्शन का उद्भव वैदिक काल मे हो चुका था। यह वेद मंत्रो के दर्शन से प्रारंभ होकर उपनिषदो के साथ समाप्त होता है। इसी लिए भारतीय दर्शन को समझने हेतु वेद मंत्रो से प्रारंभ करना आवश्यक हो जाता है। दर्शन की उत्पति का सामान्य कारण आध्यात्मिक असंतोष माना गया है। दर्शन का अर्थ है - "देखना" या "अवलोकन करना"।

देखने का अर्थ है अंतःप्रज्ञा से समझना अर्थात ब्रह्म के यथार्थ रूप (आंतरिक ज्ञान) को जानने की कोशिश करना। इसीलिए दर्शन का लक्ष्य मोक्ष निर्धारित किया गया है।

विषय वस्तु की दृष्टि से भारतीय दर्शन को 2 भागो मे बांटा गया है :-

1) सनातनी परंपरा Traditional
2) असनातनी परंपरा Non-Traditional

साधारण शब्दो मे "मोक्ष की जिज्ञासा" ही दर्शन है

भारतीय दर्शन की विशेषता :-

1. जीवन के समीप होना
2. आत्मा के शाश्वत उपस्थिति को स्वीकारना
3. पुर्नजन्म मे आस्था
4. आत्म संयम की महत्ता
5. धर्म, दर्शन और नैतिकता का सतत समन्वय
6. कर्म नियम मे विश्वास 7. बंधन से स्वतंत्र होना

Scanned with OKEN Scanner

{Que भारतीय दर्शन के मूलभूत विशेषताओ का उल्लेख करें}

भारतीय दर्शन आस्तिक व नास्तिक रूप मे विभाजित की जाती है।

आस्तिक ↓ Follower ↓ वेदो की प्रमाणिकता मे विश्वास करते हैं वो आस्तिक कहलाते हैं।

नास्तिक ↓ Hethrodox ↓ वेदो की प्रमाणिकता मे विश्वास नहीं करते है वो नास्तिक कहलाते है

आस्तिक दर्शन (6) -
1) सांख्य
2) न्याय
3) योग
4) मिमांसा
5) वैशेषिक
6) वेदांत

नास्तिक दर्शन (3) -
1) जैन
2) बौद्ध
3) लोकायत

आस्तिक दर्शन → 1) सांख्य दर्शन :-

यह एक अनिश्वरवादी दर्शन है। यह किसी ईश्वर को नहीं मानते हैं परंतु वेद की प्रमाणिकता को स्वीकार करते है। इसमे 25 तत्वो को स्वीकार किया गया है। इनमे 2 तत्व प्रमुख है - पुरुष तथा प्रकृति। इसी लिए इस दर्शन को द्वैतवादी दर्शन कहा गया।

इस दर्शन का विचार सबसे पहले कपिलमुनि (700 B.C. पहले) ने दिया

Scanned with OKEN Scanner

कपिल मुनि ने "सांख्य सूत्र" नामक ग्रंथ की रचना की

2) न्याय दर्शन :-

इस दर्शन के प्रतिपादक "अक्षपाद गौतम" माने जाते हैं। इनके द्वारा "न्याय सूत्र" नामक ग्रंथ की रचना की गई न्याय दर्शन में मोक्ष प्राप्ति का साधन ज्ञान को बताया गया है।

न्याय दर्शन को "विश्लेषण दर्शन" भी कहा जाता है इसके अंतर्गत तर्क शास्त्र का उपयोग किया जाता है तर्क एवं विश्लेषण द्वारा सत्य को जानने की कोशिश की जाती है।

3) योग दर्शन :-

इस दर्शन का विचार "पतंजलि" ने दिया था उन्होंने "योग सूत्र" नामक ग्रंथ की रचना की थी। योग दर्शन को सांख्य दर्शन का पूरक माना जाता है Bcs योग दर्शन के अंतर्गत चित का विस्तृत अध्ययन किया जाता है चित का निर्माण मन, बुद्धि व अहंकार से होता है। इसीलिए योग दर्शन के 8 अंग माने गए हैं -

- यम
- नियम
- प्रत्याहार
- प्राणायाम
- आसन
- धारणा
- ध्यान
- समाधि

4. मीमांसा दर्शन :-

इस दर्शन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति है।

इसमे वेदो की सर्वोच्चता को स्वीकार किया गया है वैसे मिमांसा शब्द का शाब्दिक अर्थ "खोजना" होता है मिमांसा दर्शन मे यह माना गया है कि मोक्ष प्राप्ति वैदिक कर्मो व यज्ञो से ही संभव हो सकती है। इस दर्शन के प्रतिपादक "जैमिनी" थे। इनकी द्वारा "मिमांसा सूत्र" की रचना की गई।

5. **वैशेषिक दर्शन** :- इस दर्शन का वैशेषिक नामकरण इस अर्थ मे है कि ब्रह्माण्ड को "विशेषो" मे विभाजित किया जा सकता है। यह दर्शन दृश्य जगत के सभी पदार्थो को 6 मुल तत्व मे बांटता है :-

- द्रव्य
- गुण
- कर्म
- सामान्य
- विशेष
- समवाय (समुह/झुंड)

यह बाद मे जोड़ा ← (अभाव)

इस दर्शन ने ही भारतीय चिंतन परंपरा मे "परमाणुवाद" की स्थापना की। "भौतिक शास्त्र" का जन्म वैशेषिक दर्शन के कारण ही माना जाता है।

इस दर्शन का प्रतिपादन - "कणाद" ने किया

6. **वेदांत दर्शन** :- इस दर्शन मे "ब्रह्म" को परम तत्व (परम सत्य) माना गया इसके अतिरिक्त सभी वस्तु को "माया/अवास्तविक" कहा गया है। इस दर्शन का मुल उपनिषद मे वर्णित है।

Scanned with OKEN Scanner

इस दर्शन का प्रतिपादन - वादरायण ने किया था
↓
"ब्रह्म सूत्र" ग्रंथ की रचना की

B. जैन धर्म

- जैन धर्म नास्तिक धर्म है।
- जैन धर्म मे संसार को दुखमय माना जाता है।
- मनुष्य जरा तथा मरण है (जरा - वृद्धावस्था, मरण - मृत्यु ग्रस्त) व्यक्ति को सांसारिक जीवन की तृष्णाएँ (इच्छाएँ) घेरे रहती है। संसार मे त्याग तथा संयास ही व्यक्ति को सच्चे सच की ओर ले जा सकता है।

जैन धर्म मे सृष्टिकर्ता ईश्वर नहीं है। संसार के सभी प्राणी अपने-2 संचित कर्मो के अनुसार कर्म फल भोगते है।

कर्म फल ही जन्म तथा मृत्यु का कारण है कर्म फल से मुक्त होकर ही व्यक्ति मोस की ओर (कैवल्य) अग्रसर होता है। इसके लिए आवश्यक है कि पुर्व जन्म के संचित कर्मो को समाप्त किया जाए। और वर्तमान जीवन मे कर्म फल से विमुक्त होकर रहने का प्रयास किया जाए। जिसके लिए त्रिरत्न आवश्यक माना गया। जैन धर्म मे "त्रिरत्न" का अर्थ है -

त्रिरत्न
- सम्यक दर्शन → सत्य मे विश्वास को
- सम्याक ज्ञान → शंका वहीन तथा वास्तविक ज्ञान को
- सम्यक आचरण → सुख एवं दुख के प्रति समभाव को

त्रिरत्न मे विशेष बल सम्यक आचरण पर दिया गया है जिसके लिए 5 महाव्रतो के पालन की बात बतायी है जो निम्न है a. अहिंसा d. अपरिग्रह
b. सत्य e. ब्रह्मचार्य
c. अस्तेय

5 महाव्रत a. अहिंसा
b. सत्य
4 पार्श्वनाथ द्वारा
c. अस्तेय → बिना अनुमति के किसी की वस्तु न लेना / चोरी न करना
d. अपरिग्रह → किसी भी संपति एकत्रित न करने पर जोर
e. ब्रह्मचर्य → महावीर स्वामी ने जोड़ा

सिद्धांत : 1) मोक्ष/कैवल्य प्राप्ति जैन धर्म के अनुयायी -यो का परम लक्ष्य है।
2) 24 तीर्थंकरो को सर्वज्ञ व सर्व शक्तिशाली माना गया। ↳ सब कुछ जानने वाला
3) सृष्टि के विषय मे यह अवधारणा है कि न तो कोई इसका निर्माण करता है न ही कोई इसको विनष्ट कर सकता है।
4) जैन धर्म अनिश्वर वादी है।
5) यह ईश्वर तथा वेदो की सत्ता मे विश्वास नहीं करता इसी लिए जैन धर्म को नास्तिकवादी माना गया
6) यह अहिंसा मे आदर्श स्थिति तक अटूट विश्वास का समर्थक है।
7) यहा कर्म को प्रधानता दी गई है।
8) यह आत्मा के अस्तित्व को स्वीकारता है।

Scanned with OKEN Scanner

स्याद्वाद / अनेकांतवाद / अनेकतावाद / क्षण भंगुरवाद / सप्त भंगीमय सिद्धांत :-

जैन धर्म के अनुसार किसी भी वस्तु के अनंत गुण होते हैं। जो व्यक्ति कैवल्य प्राप्त होता है वो ही अनंत गुणो का ज्ञान रख सकता है। साधारण मानव का ज्ञान आंशिक व सापेक्षीक है। जैन दर्शन मे किसी वस्तु के आंशिक ज्ञान को "नय" कहा जाता है। जैन धर्म के अनुसार ज्ञान की यह विविधता (7) प्रकार की हो सकती है।

- है
- नहीं है
- है और नहीं है
- कहा नहीं जा सकता
- है, कहा नहीं जा सकता
- नहीं है, कहा नहीं जा सकता
- है और नहीं है, और कहा नहीं जा सकता

इसे ही जैन धर्म मे "स्यष्ठवाद" के नाम से भी जाना गया।

जैन दर्शन :-

- जैन दर्शन मे यज्ञ, कर्मकांड, वर्ण व्यवस्था को नकारा गया।
- अनिश्वरवादी दर्शन होने के कारण जैन धर्म मे ईश्वर की सर्वोच्चता को स्वीकार नहीं किया गया ईश्वर को तीर्थंकरो के नीचे स्थान दिया गया है

Scanned with OKEN Scanner

- अनेकांतवाद के अंतर्गत सभी प्राकृतिक सजीव व निर्जीव वस्तुओ के अंदर आत्मा की संकल्पना को स्वीकार किया गया है। जैसे मनुष्य, पेड़, पर्वत, नदी, पशु, पक्षी

- जैन दर्शन के अंतर्गत संलेखना / कायाक्लेश के माध्यम से शरीर त्यागने और इंद्रीयनिग्रह की बात की गई संथारा → Court के द्वारा अमान्य है।

- जैन धर्म, बौद्ध धर्म तथा हिन्दु धर्म के विपरीत सृष्टि को अनादि एवं अनंत मानता है। सृष्टि का विकास जीव, जड़ (अजीव) के संयोजन से हुआ है। जीव के अंतर्गत मुख्यतः 2 प्रकार के जीव की संकल्पना स्वीकार की गई है :-

→ मुक्त जीव - इसमे कैवल्य प्राप्त एवं तीर्थंकर शामिल
→ बंधन ग्रस्त जीव - इसमे जो कैवल्य प्राप्त नहीं है, उन्हे शामिल किया गया

C. बौद्ध धर्म

↳ यह अनिश्वरवादी एवं अनात्मावादी धर्म है लेकिन हिन्दू एवं जैन धर्म की भांति पुर्नजन्म पर विश्वास करता है।

↳ इसमे निर्वाण की प्राप्ति को ही चरम लक्ष्य माना जाता है।

↳ भारत मे बौद्ध धर्म का उदय ब्राह्मणवाद की प्रतिक्रिया के कारण हुआ। छठी शताब्दी B.C. के दौरान सामाजिक और आर्थिक विषमताओ ने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी की जैन धर्म की तरह बौद्ध धर्म का भी उदय हुआ

↳ 29 वर्ष की आयु मे बुद्ध ने गृह त्याग किया था जिसे "महाभिनिष्क्रमण" कहा गया। बुद्ध के प्रारंभिक जीवन पर 4 घटनाओ का विशेष प्रभाव पड़ा जिसमे वृद्ध व्यक्ति → बीमार व्यक्ति → शव यात्रा → प्रसन्नचित्त संन्यासी थे।

सिद्धार्थ ज्ञान की खोज मे सबसे पहले वैशाली के पास "आलार कलाम" के पास गये। आलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान थे। फिर वह राजगिर के पास "रुद्रकराम पुत्र" के पास गये लेकिन बुद्ध को आध्यतमिक संतोष प्राप्त नही हुआ।

* मज्झिम निकाय तथा ललित विस्तर के अनुसार 6 वर्ष के अभ्यास के बाद बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ (बोध गया मे)

↓

उरुवेला (मोहना व निरंजना नदी के पास)

35 वर्ष की आयु मे वैशाख पुर्णिमा के दिन पीपल वृक्ष के नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुयी बोध धर्म मे इस घटना को संबोधी कहा गया।

बोध गया से बुद्ध सारनाथ गये वहा पर उन्होने 5 ब्राह्मणो को ज्ञान दिया इस घटना को "धर्मचक्र प्रवर्तन" कहा गया है। (इसका उल्लेख संयुक्त निकाय)

बोध दर्शन :-

बुद्ध संसार को दुख से पुर्ण मानते है इस दुख पुर्ण संसार से मुक्ति खोजना मनुष्य का कर्तव्य है। बुद्ध ने वेदो की आलोचना की, बुद्ध की शिक्षाए बहुत व्यवहारिक थी, बुद्ध ने ज्ञान के लिए चार आर्य सत्य की बात कही 4 आर्य सत्य के अंतर्गत 1. दुख है
2. दुख का समुदय (कारण)
3. दुख का निरोध है
4. दुख निरोध गामी प्रतिपदा

चौथे आर्य सत्य से अष्ठांगिक मार्ग जुड़ा है, बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से मध्यम मार्ग के महत्व को समझाया - अष्टांगिक मार्ग के अंतर्गत

I st सम्यक दृष्टि
II nd सम्यक वाणी
III rd सम्यक कर्म
IV th सम्यक आजीविका
V th सम्यक व्यायाम
VI th सम्यक स्मृति
VII th सम्यक समाधि

अष्टांगिक मार्ग को 3 स्कंदो मे बांटा गया है :-

1. प्रज्ञा स्कंद
   - सम्यक द्दष्टि
   - सम्यक संकल्प
   - सम्यक वाणी

2. शील स्कंद
   - सम्यक कर्म
   - सम्यक आजीविका

3. समाधि स्कंद
   - सम्यक व्यायाम
   - सम्यक स्मृति
   - सम्यक समाधि

दुसरे आर्य सत्य "दुख का समुदय" है अर्थात दुख उत्पन्न होने के अनेक कारण हैं सभी कारणो का मुल "तृष्णा" है।

⇨ प्रतित्यसमुत्पाद :- बौद्ध धर्म मे इस सिद्धांत की व्याख्या की गई है प्रतित का अर्थ होता है "इसके होने से" तथा समुत्पाद का अर्थ होता है "उत्पन्न होना"। अर्थात प्रत्येक कार्य का एक कारण होता है

बौद्ध संघ :- बौद्ध धर्म के अनुयायियो मे सामान्यत: 2 प्रकार के लोग होते थे →

a सामान्य अनुयायी   b. सक्रिय अनुयायी

बुद्ध ने धार्मिक व दार्शनिक विचार देने के साथ-2 संघ की भी स्थापना की जिसमे प्रवेश के लिए, ज्ञान प्राप्ति के लिए तथा व्यवस्था चलाने के लिए विभिन्न नियम बनाये गए थे। बौद्ध संघ सक्रिय अनुयायीयो के लिए था

Scanned with OKEN Scanner

Rules

1. संघ मे कुछ लोगो का प्रवेश वर्जित था। जिसमे दास रोगी, ऋणी, अपराधी, Etc.
2. संघ मे प्रवेश की न्युनतम आयु 15 वर्ष होनी चाहिए
3. प्रवज्या → 15 वर्ष की आयु मे संघ मे प्रवेश हेतु नियम एवं प्रक्रिया
4. उपसंपदा → 20 वर्ष की आयु मे दीक्षा को पूर्ण करने पर सम्पन्न की जाने वाली प्रक्रिया।
5. कंचीन → बौद्ध भिक्षु 3 वस्त्र धारण करते थे जिसे वे स्वयं नहीं खरीद सकते थे या तो दान मे प्राप्त होता था या संघ द्वारा भेंट दिया जाता है।
6. उपोसथ पाठ → इसके तहत भिक्षु (monk) को प्रत्येक माह एकत्र होकर अपराधो को स्वीकार करना होता है।
7. पातिमोख → यह नियम के माध्यम से भिक्षु के लिए 227 आचरण संबंधी संग्रहण था जिसे भिक्षु, भिक्षुणियो के लिए आवश्यक माना गया था

इन्ही Rules के माध्यम से संघ के प्रति बुद्ध के व्यवहारिक दृष्टिकोण को समझा जा सकता है।

⇒ बौद्ध धर्म की लोकप्रियता का कारन :-

बुद्ध ने चतुर्थ वर्ण व्यवस्था की जटिलता को नहीं माना, व्यवसायिक कार्यों को अनुमति प्रदान की जीव हत्या को अमान्य माना, धार्मिक वाद विवाद से स्वयं को अलग रखा

Scanned with OKEN Scanner

माली भाषा मे अपने अधिकांश प्रवचन दिये। जो लोग को समझने मे बहुत सहज था।

संघ के संचालन मे लोकतांत्रिक नियमो का पालन किया आदि कारणो से बौद्ध धर्म की लोकप्रियता बहुत बढ़ी बुद्ध के सर्वाधिक प्रवचन श्रावस्ती मे दिये तथा कभी उज्जैन नहीं गये।

D. इस्लाम धर्म

भारत आगमन से लेकर वर्तमान तक इस्लाम मे लगभग प्रत्येक क्षेत्र मे भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है। कला, संगीत, स्थापत्य, खानपान, वस्त्र, आदि सभी क्षेत्रो मे इस्लामिक मान्यताओं को व्यापक रूप मे देखा जा सकता है।

इस्लाम धर्म एकेश्वरवाद पर आधारित है। जिसमे ईश्वर (अल्लाह) को सर्वशक्तिमान माना गया है। उसकी किसी रूप मे (मूर्ति रूप मे) उपासना नहीं हो सकती। इस धर्म मे सभी मनुष्य को समान मानकर एक ही ईश्वर का अंश माना गया है। इस्लाम धर्म के संस्थापक मुहम्मद साहब ने प्रत्येक मुसलमान के लिए 6 नियमो के पालन को आवश्यक माना :-

Rules - 1) कलमा पढ़ना (ईश्वर एक है)
2) दिन मे 5 बार नमाज पढ़ना
3) आय का एक हिस्सा (2.5%) जकात रूप मे देना
4) रमजान माह मे रोजा रखना
5) आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक मुसलमान को "जेहाद" या धर्मयुद्ध करना चाहिए
6) जीवन मे कम से कम 1 बार हज करना चाहिए

Scanned with OKEN Scanner

जजिया ÷ गैर मुस्लिमो से लिया जाने वाला कर
जकात ÷ मुस्लिमो से लिया जाने वाला कर
खुम्स ÷ युद्ध मे लूट का सामान
खराज ÷ गैर मुस्लिमो से खेती का कर

रमजान माह ÷ कुरान लिखा गया था।
जेहाद ÷ धार्मिक मे आयी बुराइयो के खिलाफ लड़ाई।

↳ अरबी भाषा मे इस्लाम शब्द का अर्थ है - "अल्लाह के प्रति समर्पण"

कुरान को मुसलमान अल्लाह की भेजी अंतिम पवित्र ग्रंथ मानते है।

इस्लाम के 5 ग्रंथ
1) कुरान K
2) शरीयत S
3) कयास K
4) इज्मा I
5) हदीस H

SIKH

E. सिक्ख धर्म

↳ भारत के उत्तर पश्चिम भू-भाग मे सांस्कृतिक परिवर्तन बाह्य आक्रमण एवं प्रसार मे एक नवीन धर्म की स्थापना को अपरिहार्य बना दिया।

↳ सिक्ख शब्द के शिष्य शब्द से बना है (संस्कृत के) जिसका अर्थ है सिखने वाला सिक्ख धर्म के मुल अवधारणा मे हिन्दू व इस्लाम के समन्वय के प्रभाव को देखा जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

लगभग 900 वर्षों तक दोनों धर्म (H+M) भारतीय समाज के अभिन्न अंग रहे सिक्ख धर्म की कुछ विशेषताएं हिन्दू धर्म से ली गई है जबकि कुछ आचरण इस्लाम से अपनाये गए। सिक्ख

↳ सिक्ख धर्म की प्रमुख विशेषताएँ व सिद्धांत :-

- अकाल पुरुष की अवधारणा
- किसी भी व्यक्ति को जन्म से सिक्ख नहीं माना गया।
- सिक्ख धर्म/ खालसा पंथ मे प्रवेश के लिए "पाहुल" नामक संस्कार किया जाता है।
- प्रत्येक सिक्ख हेतु पंच ककार अनिवार्य है :-

1) केश
2) कृपाण
3) कड़ा
4) कंघा
5) कच्छा

गुरुनानक देव जी के धर्म से संबंधित उपदेश के 3 रूप माने गए है। - कीर्त करो → कर्म करो

ईश्वर आराधना ← नाम जपो

वंड छको → दया, परोपकार और दान

पं. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाईल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित पंचशील सोशियल वेलफेयर एण्ड एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-mail : info.bidevanda@yahoo.com

प्राचीन शिक्षा के केन्द्र

तक्षशिला :- भारत का सबसे प्राचीन शिक्षा केन्द्र माना जाता है जो वर्तमान समय मे अवशेष के रूप मे पाकिस्तान मे अवस्थित है। तक्षशिला के विषय मे विभिन्न धर्म ग्रंथो मे अलग अलग संदर्भ के रूप मे व्याख्या प्राप्त होती है सबसे प्रसिद्ध व्यक्ति जो आचार्य के रूप मे तक्षशिला से संबंधित थे वो कौटिल्य/चाणक्य है जो तक्षशिला मे आचार्य पद पर रहते हुए शिक्षण कार्य करते थे ऐतिहासिक स्त्रोतो मे जब सिकंदर ने भारत पर हमला किया उस समय भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र मे एक अव्यवस्था का निर्माण हुआ था जिसके कारण कौटिल्य को धनानंद से सम्पर्क स्थापित करना पड़ा था।

जब फाह्यान भारत आया था तो उसने भी अपने ग्रंथ "फो-क्यो-कि" मे तक्षशिला के विषय मे वर्णन किया है तक्षशिला मे कई देशो के लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे जिन्हे विभिन्न माध्यमो से तर्कशास्त्र, कूटनीति शास्त्र, इत्यादि जैसी शिक्षाएँ प्रदान कि जाती थी।

कनिष्क ने तक्षशिला मे ही अपनी राजधानी बनाई थी जिसे पुरुषपुर कहा गया।

Scanned with OKEN Scanner

नालंदा : प्राचीन कालीन भारतीय शिक्षा केन्द्रो मे नालंदा महाविहार एक प्रसिद्ध शिक्षा का केन्द्र था यह बौद्ध धर्म के महायान शाखा से संबंधित था। ह्वेनसांग के अनुसार इसका निर्माण गुप्त शासक कुमार गुप्त I[st] ने कराया था। जिसे शक्रादित्य भी कहा गया है। नालंदा की खुदाईयों से पता चलता है कि यह महाविहार लगभग 1 मील (1.5 km) तथा 1/2 मील चौड़े क्षेत्र फल मे फैला था

ह्वेनसांग के जीवनी कार ब्रि-ली (बिली) ने नालंदा के भवनो का विवरण लिखा है। वो कहता है "सम्पुर्ण संस्थान ईंटो की दीवारो से घिरा है, जिसमे कई मठ बने है एक द्वार विद्यापीठ की ओर है जिसे 8 अन्य बड़े कक्ष जुड़े है जिसे संघाराम, ने से भी बुलाया जाता था, दीवारे अंलकृत है जिसकी सजावट एक विशिष्ट आर्कषण का निर्माण करती थी।"

नालंदा महाविहार मे न केवल भारत के कोने-2 से अपितु चीन, मंगोलिया, तिब्बत, कोरिया, मध्य एशिया आदि देशो से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थें। बिली के अनुसार यहा पढ़ने वाले छात्रो की संख्या 10000 से ज्यादा थी यह भी उल्लेख प्राप्त होता है कि यहा पर नामांकन हेतु प्रवेश परीक्षा का आयोजन होता था। पाठ्यक्रम मे महायान तथा बौद्ध धर्म के 18 संप्रदायो के ग्रंथो के अतिरिक्त वेद, शब्द विद्या, योग शास्त्र, चिकित्सा, तंत्र विद्या, सांख्य दर्शन आदि कि शिक्षा व्याख्यानो के माध्यम से दी जाती थी। विभिन्न विषयो के प्रखंड विद्वान अपने व्याख्यान प्रस्तुत करते थे।

ह्वेनसांग जो स्वयं यहा 18 महिनो तक रहकर शिक्षा ग्रहण किया था।

ह्वेनसांग के समय शीलभद्र, नालंदा विहार के कुलपति थे। चीनी यात्री उनके चरित्र और विद्वता की बहुत प्रशंसा करते हैं। इतना ही नहीं अन्य विद्वानों मे धर्मपाल जो शीलभद्र के गुरु थे तथा शीलभद्र के पहले नालंदा के कुलपति भी थे। चंद्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभामित्र, जीनमित्र, ज्ञानचंद्र आदि का नाम भी उल्लेखनीय हैं। ये विद्वान होने के साथ-२ कई ग्रंथो के रचनाकार थे। नालंदा महाविहार मे ३ पुस्तकालय तीन खंडो मे प्राप्त होते हैं-

रत्नोदधि
रत्नसागर } पुस्तकालयो के नाम
रत्नरंजक

बख्तियार खिलजी ने नालंदा विहार को नष्ट किया जो कि एक घृणित कार्य था।

विक्रमशीला - इस महाविहार की स्थापना पाल वंश राजा धर्मपाल ने करवाया था धर्मपाल (775-800 ई.), विक्रमशीला वर्तमान मे बिहार प्रांत के भागलपुर जिले मे अवशेष स्थित हैं। धर्मपाल ने यहा मंदिर तथा मठ बनवाये और उदारता पूर्वक दान दिया। यहा के विषय मे यह उल्लेख प्राप्त होता है कि यहा पर 160 विहार थे। इसके अलावा कई व्याख्यान के लिए कक्ष बने हुए थे। इतना ही नहीं धर्मपाल के उतराधिकारी 13वी शताब्दी तक राजकीय संरक्षण के अधीन रहा यही कारण है कि लगभग 4 शताब्दीयों से भी अधिक विक्रमशीला महाविहार विश्व प्रसिद्ध महाविहार के रूप मे स्थापित रहा विक्रमशीला महाविहार के अंतर्गत 6 महाविद्यालय था और लगभग 108 अध्यापकों की सूची प्राप्त होती

Scanned with OKEN Scanner

केन्द्रीयकक्ष को 'विज्ञान भवन कक्ष' कहते थे। प्रत्येक महाविद्यालय मे एक प्रवेश द्वार होता था तथा प्रत्येक प्रवेश द्वार पर एक-2 द्वार पंडित बैठता था। द्वार पंडित द्वारा परीक्षण किये जाने के बाद ही किसी विद्यार्थी का महाविद्यालय मे प्रवेश संभव था।

विक्रमशीला महाविहार के प्रत्येक प्रवेश द्वार के द्वार पंडितो के नाम मिले है।

द्वार ↓	पंडित ↓
पुर्व	आचार्य रत्नाकर शांति
पश्चिम	वागीश्वर कीर्ति (वाराणसेय)
उतर	नरोप
दक्षिण	प्रभाकर मति
प्रथम केन्द्रीय कक्ष	रत्न वज्र
द्वितीय केन्द्रीय कक्ष	ज्ञानश्री मित्र

विक्रमशीला महाविहार मे अध्ययन से संबंधित विषयो मे व्याकरण, तर्कशास्त्र, मीमांसा (खोज), तंत्रविधा, विधि आदि विशिष्ठ थे। लेकिन विक्रमशीला महाविहार का पाठ्यक्रम नालंदा की तरह विस्तृत नही था। यहा के आचार्यो मे सर्वाधिक प्रसिद्ध नाम आचार्य दीपंकर का प्राप्त होता है जो बाद मे विक्रमशीला के कुलपति बने। आचार्य दीपकंर के विषय मे यह उल्लेख मिलता है वे हीनयान, महायान, वैशेषिक तथा तर्कशास्त्र के विद्वान थे। तिब्बती बौद्ध धर्म के महान लेखक भी थे 11 वी शताब्दी मे तिब्बत के राजा चंचुब के आमंत्रण पर वह तिब्बत गये और वहा बौद्ध धर्म मे सुधार के लिए अनेको विचार से महत्वपूर्ण योगदान दिया। तिब्बती स्त्रोतो मे उन्हे 200 ग्रंथो की रचना का श्रेय दिया गया है। 12 वी शताब्दी मे अभयांकर गुप्त यहा के आचार्य थे। वे तंत्रवाद के महापंडित थे।

Scanned with OKEN Scanner

विदेशी यात्री वृत्तांत एवं योगदान

मेगस्थनीज :- सेल्युकस निकेटर का यूनानी राजदूत लगभग 304 B.C. से 299 B.C. तक पाटलीपुत्र मे रहा एवं उसी दौरान के वृतांतो को 4 खंडो मे "इंडिका" ग्रंथ के रूप मे संकलन किया।

↳ इंडिका की मूल प्रति वर्तमान मे उपलब्ध नही है। इसका विवरण विभिन्न यूरोपीय विद्वानो ने दिया है जिसमे मुख्य रूप से एरियन, प्लिनी, जस्टिन आदि शामिल है

↳ मेगस्थनीज ने भारत की भौगोलिक दशा पर विवरण दिया है। वह कहता है भारत की भौगोलिक बनावट चतुर्भुज के समान है। भारत की जलवायु अच्छी है यहा की भूमि उर्वर है। कही नदिया बहती है। (58) नदियो का उल्लेख किया है यह दक्षिण भारत की एक भी नदी की चर्चा नही करता है।....

* इसके अनुसार "सिलास" नामक नदी मे कुछ भी तैर नही सकता है। भारत मे खनिज की विविधता है

↳ मेगस्थनीज ने भारतीय समाज के विषय मे भी महत्वपूर्ण जानकारी दी है इसके अनुसार भारतीय जनता समृद्ध थी, लोगो मे व्यक्तिगत नैतिकता थी, चोरी नही होती थी, घरो मे ताले नही लगाये जाते थे, न्यायालय का प्रयोग कम होता था, भारतीय ब्याज नही लेते थे, सामान्य लोग शराब नही पीते थे लोग स्वस्थ एवं दीर्घायु थे। भारतीय समाज के विभिन्न रिति रिवाजो की चर्चा किया है।

सामाजिक प्रथाओ मे बहुविवाह का प्रचलन का वर्णन किया जो कि धनी लोगो मे ज्यादा प्रचलित था

✓ सती प्रथा का प्रचलन नही था।

✓ विवाहो मे आर्ष विवाह का प्रचलन था।

✓ जाति प्रथा समाज का मूल आधार था।

Scanned with OKEN Scanner

अंतर्जातीय विवाह सामान्य तौर पर नहीं होते थे दास प्रथा प्रचलित नहीं थी।

भारतीय समाज को 7 जातीयो मे विभाजित किया है।

↳ मेगस्थनीज आर्थिक के साथ-2 अन्य विविध पक्षो की भी चर्चा करता है जिसमे चन्द्रगुप्त के दरबार राजसभा, महल आदि की चर्चा है।

↳ इसके अनुसार राजा मात्र 4 विशेष अवसरो पर ही बाहर निकलता था (युद्ध यज्ञ, शिकार, न्याय)

↳ स्त्री अंगीरक्षिकाएँ भी नियुक्त होती थी। अपराध कम होते थे। राजा का दंडविधान कठोर था।

↳ शासकीय संपत्ति को क्षति पहुँचाने पर मृत्यु दंड भी दिया जाता था।

↳ कहता है भारतीय पुर्नजन्म मे विश्वास करते थे।

↳ श्री कृष्ण के लिए "हेराक्लीज" शिव के लिए "डायोनिसस" शब्द का प्रयोग किया है। जिनकी लोग पुजा करते थे।

फाह्यान : गुप्तकाल मे चंद्रगुप्त विक्रमादित्य / द्वितीय के काल मे आने वाला चीनी यात्री था

↳ यह भारत मे लगभग 405 A.D. से 411 AD तक रहा।

↳ यह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसकी यात्रा का मुल उद्देश्य बौद्ध धर्म ग्रंथो की खोज एवं संग्रहण था

↳ इसने भारत मे संस्कृत का अध्ययन किया एवं तक्षशिला, गांधार एवं पेशावर की यात्रा करता हुआ पाटलीपुत्र पहुँचा।

↳ इसने यात्रा वृतांत को "फो-क्यो-कि" नामक चीनी

↳ फाह्यान के राजनैतिक विचारो के अंतर्गत भारत के विषय मे राजा का कोई उल्लेख नहीं किया है। साथ ही कहता है कि प्रशासन मे कठोरता नहीं थी, भूमि कर नगद अथवा अनाज दोनो मे लिये जाते थे, चोरी व अपराध कम होते थे। दंड व्यवस्था कठोर नही थी, अर्थदंड नहीं दिये जाते थे।

↳ फाह्यान ने धर्म संबंधित विशेषताओ का भी उल्लेख किया है। फाह्यान कहता है कि बौद्ध धर्म पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत जैसे पंजाब, मथुरा, आदि मे फल फूल रहा था। उसने पुरुषपुर (पेशावर old Name) स्थित स्वर्णमंडित विहार को देखा था जिसका निर्माण कनिष्क ने करवाया था।

इतना ही नही यह कहता है कि मैंने बुद्ध के भिक्षापात्र एवं चंदन की छड़ी के भी दर्शन किए विशाल वार्षिक रथ यात्रा उत्सव का वर्णन किया है रथ पर भगवान बुद्ध की विशाल प्रतिमा का उल्लेख करता है

↳ फाह्यान कहता है कि भारतीय अमीरो ने निशुल्क चिकित्सा की व्यवस्था कि थी। परंतु चिकित्सालय की व्यवस्था भी अच्छी थी। फाह्यान के अनुसार पाटलीपुत्र मगध का एक महत्वपूर्ण नगर था।

↳ फाह्यान ने पाटिपुत्र से रसिण की यात्रा की इस यात्रा के संबंध मे फाह्यान कहता है कि यहा के मार्ग असुरक्षित है।

↳ फाह्यांग, तामलिप्ती से श्रीलंका गया, जावा होते हुए अपने देश लौट गया।

ह्वेनसांग ÷ यह चीन से भारत आने वाले यात्रियो मे विशिष्ट स्थान रखता है।

↳ यह भारत मे जिस समय आया उस समय हर्षवर्धन का शासन था।

↳ लगभग 14 वर्ष भारत मे रहा था इस यात्रा के दौरान अनुभव एवं वृतांतो को "सि-यु-की" नामक ग्रंथ के माध्यम से व्यक्त किया।

↳ यह भी बौद्ध धर्म का अनुयायी था इसे यात्रियो का राजकुमार" एवं "नीति का पंडित" कहा गया है।

↳ इसकी गहरी रुचि बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथो को अध्ययन करना एवं भारत मे भगवान बुद्ध से संबंधित समस्त गतिविधियो का साक्षात्कार करना था।

↳ यह काशगर, समरकंद, बल्ख, पेशावर, तक्षशिला, होते हुए कश्मीर पहुँचा था फिर थानेश्वर होते हुए पंजाब पहुँचा, मथुरा से गुजरते हुए यह हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज पहुँचा। बाद मे यह पाटलीपुत्र भी गया

↳ ह्वेनसांग कहता है इस समय पाटलीपुत्र ज्ञान, शिक्षा, धर्म संस्कृति का केन्द्र बिन्दु नहीं था। पाटलीपुत्र, ह्वेनसांग बोधगया पहुँचा एवं भगवान बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति स्थल को देखा। यहा से वह नालंदा पहुँचा जहा उसने 2 वर्ष संस्कृत की शिक्षा ली। यहा से वह कामरूप (आसाम) गया। कामरूप से होते हुए ताम्रलिप्ती से कांचीपुरम गया फिर 644 मे हर्ष से विदाई लेने पर जालंधर के राजा उदित ने उसे सीमा तक छोड़ दिया। अनंत वह अपने देश वापस चला गया।

↳ ह्वेनसांग की जीवनी उसके मित्र ("ह्वीली") ने लिखा है।

↳ ह्वेनसांग के राजनैतिक विचार से संबंधित उल्लेख मे वह कहता है कि हर्ष ने अपनी दिनचर्या को 3 भागो मे बाँट रखा है।

↳ बेगारी प्रथा नही थी, भूमि कर कुल उपज का 1/3

Scanned with OKEN Scanner

↳ हर्ष ने अपनी पुरी आय को 4 भागो में बांट दिया थ
A) वेतन B) दान C) आपातकाल D) राज्य के लिए
↳ अपराधियो के दंड के लिए कठोर दंड दिया जाता था
↳ यात्रा के दौरान डाकूओं का भय बना रहता था।
↳ सामाजिक विचार के अंतर्गत वह कहता है कि भारत के लोग नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ थे। जाति प्रथा समाज का आधार था। शूद्र, कृषक रूप में मान्य थे छुआछूत प्रथा, समाज का अभिन्न अंग थी। लोग सफाई पर विशेष ध्यान देते थे। स्त्री, पुरुष दोनों आभूषण पहनते थे। अंतरजातीय विवाह होता था, विधवा पुर्न विवाह नही होते थे।

भारतीय कला विरासत एवं संरक्षण

कला के विविध आयम होते है जो हमारी विरासत के बनाए रखने मे महत्वपुर्ण योगदान देते है। समृद्ध संस्कृति के विरासत का संरक्षण वर्तमान समाज के लिए एक चुनौती होता है। भारत के संविधान मे मौलिक कर्तव्य 51 (A) के अंतगर्त नागरिकों को जागरूक करते हुए ऐसे विरासत के लिए कर्तव्य वान होने की बात कही गई है।

इसी तरह Art 49 मे सांस्कृतिक परम्परा के संरक्षण की बात की गई है। इसके अलावा भारत का पर्यटन मंत्रालय भी ऐसे विशिष्ट स्थलो को संरक्षित करने के लिए गंभीर प्रयास करती रहती है। अंतराष्ट्रीय स्तर पर युनेस्को भी विशिष विश्व धरोहर सुची के अंतगर्त समय-2 पर संज्ञा लेते हुए कला के संरक्षण को बढ़ावा देता है।

कला के विरासत का संरक्षण देश के इतिहास का अभिन्न अंग मानकर किया जाना चाहिए। अगर इसका संरक्षण नहीं किया जाएगा तो हमारे समाज व संस्कृति के लिए सांस्कृतिक पहचान का संकट भी खड़ा हो सकता है

इसी लिए भारत सरकार ने निजी सहभागिता को भी कला संस्कृति के संरक्षन मे एक सक्रिय भागीदारी का निमंत्रण दिया है। इस आग्रह के कारण कई ऐसे ऐतिहासिक स्थल है जिसके रखरखाव का दायित्व सरकार ने सावधानी पुर्वक नीजी हाथो मे दिया है (लाल किला)

इसी लिए "मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग" (MOU) योजना क्रियान्वीत कि जा रही है। प्राचीन विरासत को संरक्षित करने से अनेकों लाभ प्राप्त हो सकते है :-

1) विरासत संरक्षण से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।
2) विदेशो से आने वाले यात्री भ्रमण के दौरान जिन वस्तुओ

का उपयोग करेंगे उससे आर्थिक गतिविधियो मे वृद्धि होगी
3) विदेशी मुद्रा भंडार का संग्रह बढेगा।
4) राजनैतिक व धार्मिक समन्वय और बंधुता बढेगी
5) देश के लोगो को अपनी परंपरा पर गर्व करने की अनुभूति होगी।

Scanned with OKEN Scanner

नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित पन सोशियल वेलफेयर एण्ड एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-mail : info.bidevanda@yahoo.com

भक्ति एवं सूफी आंदोलन

भक्ति अर्थात व्यक्तिगत प्रेम एवं सम्पर्ण समर्पण की अभिव्यक्ति, सबसे पहले वैदिक काल मे लिखे उपनिषदो मे हुयी लेकिन मध्यकालीन भारत मे इसका विकास दक्षिण भारत के तमिलनाडु से माना जाता है।

वैष्णव मतावलम्बी (अलवार) एवं शैव मतावलंबी (नयनार) के द्वारा व्यक्तिगत प्रेम एवं सम्पर्ण को मोक्ष एवं भक्ति का सहज मार्ग बताया गया।

इन लोगो ने जाति व्यवस्था की कठोरता का विरोध किया इनकी अन्य विशेषता थी कि ये अपने विचारो को दोहा, छंद एवं पदो के माध्यम के रूप मे स्थानीय भाषाओ मे सामान्य जन मे पहुँचाते थे।

लगभग इसी समय वैदिक कर्मकांडो एवं जटिलताओ के बीच शंकराचार्य ने "अद्वैतवाद का सिद्धांत" प्रतिपादित किया। शंकराचार्य के अनुसार ईश्वर एवं आत्मा के बीच एकात्मकता मोक्ष के लिए अनिवार्य है। इन्ही के अनुसार माया एवं मोह को दूर करने का उपाय ज्ञान है। ∵ तात्कालिक परिस्थिति मे ज्ञान प्राप्ति का अधिकार ब्राह्मण एवं उच्च जाति को था इसी लिए शंकराचार्य का सिद्धांत आमजनमानस पर कोई विशेष प्रभाव नही डाल सका।

शंकराचार्य ने भारत की 4 दिशाओ मे 4 मुख्य स्थानो पर 4 मठ स्थापित किए :-

यह भारत की भौगोलिक एकीकरण के साथ-2 सांस्कृतिक एकीकरण मे सहायक बना।

11 वी शताब्दी मे रामानुजाचार्य ने भक्ति के अपने विशिष्ट अवधारणा विशिष्टाद्वैत का सिद्धांत दिया। इसने अनुसार व्यक्ति की आत्मा ईश्वर के साथ एकाकार होने के बावजूद कुछ तरह से अलग भी रहता है। रामानुजाचार्य के अनुसार जीव की मुक्ति के लिए ज्ञान आवश्यक है लेकिन उससे भी आवश्यक है ईश्वर की कृपा।

Scanned with OKEN Scanner

रमानुज के इस सिद्धांत को व्यापक स्वीकृति मिली।

- निम्बार्काचार्य एवं माधवाचार्य, रामानुजाचार्य के समकालीन संत थे जिनके प्रयास से भक्ति आंदोलन का महत्वपूर्ण प्रचार प्रसार हुआ। निम्बार्क उत्तर व दक्षिण से जुड़े थे जबकि माधवाचार्य दक्षिण से संबंधीत थे।

- नाथ पंथीयो एवं तंत्रमंत्र प्रधान प्रचलित धार्मिक व्यवस्था को चुनौती दी इनके दरवाजे स्त्रीयो एवं निम्न जातियो के लिए खुले थे

- महाराष्ट्र मे नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, जैसे अनेक महत्वपूर्ण संत हुए इन लोगो ने भक्ति आंदोलन मे जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसे समंवित रूप से महाराष्ट्र धर्म कहाजाता है पंढरपुर एक प्रमुख तीर्थस्थल बन गया जिसमे विठोबा की स्तुती की जाती है। महाराष्ट्र धर्म के लोगो ने जिन साहित्यो का निर्माण किया उसे "अभंग" कहा जाता है। संत ज्ञानेश्वर ने श्री मद भगवत गीता की मराठी टीका "ज्ञानेश्वरी" की रचना की। शिवाजी के काल मे समर्थ गुरु रामदास एक प्रभाव संत हुए।

- कर्नाटक मे वीर शैव / लिंगायत संप्रदाय की स्थापना बासव ने किया। इनके सर्वोच्च आराध्य भगवान शिव है। इनका मानना था कि सभी मनुष्यो के भीतर मानवता स्थापित है।

उत्तर भारत मे भक्ति आंदोलन –

यहा भक्ति आंदोलन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। भक्ति आंदोलन को दक्षिण से उत्तर लाने का श्रेय रामानंद को दिया जाता है। यह राम को सर्वोच्च ईश्वर मानते है इनके शिष्यो मे सभी धर्मो एवं जाति के लोग थे। रविदास / रैदास – चमड़े का कार्य
कबीर – जुलहा

सैना जी - नाई
सदना जी - कसाई
धन्ना जी - जाट

इनके अनुयायी 2 भागो मे बट गये -

A) निर्गुण	B) सगुण
↓	↓
• यह परिवर्तनवादी थे। • निर्गुण संतो मे कबीर नानक प्रमुख है।	• यह परंपरा मे विश्वास करते थे • सगुण परपंरा मे तुलसीदास प्रमुख संत हुए। • तुलसीदास ने रामचरित मानस जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की। • बंगाल मे चैतन्य महाप्रभु हुए जो कृष्ण के अनन्य भक्त थे इनके उपदेशो का सार है कि कोई व्यक्ति

भगवान कृष्ण की उपासना करता है, गुरु की सेवा करता है एवं माया से मुक्त रहता है तो वह ईश्वर से एकीकृत हो जाएगा।

• चैतन्य महाप्रभु राधा कृष्ण की तरह ही प्रेम के हिमायती थे उन्होने संगीत एवं नृत्य को ईश्वर अराधना का सहज एवं मुख्य मार्ग बताया

• चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के माध्यम से समाज सुधारक के रूप मे भी ख्याति प्राप्त किये।

भक्ति आंदोलन के प्रभाव →

1. सामाजिक समानता और समन्वय को बढ़ावा
2. एक ऐसी विचारधारा जिसमे एक मिश्रित संस्कृति का विकास हुआ।
3. विभिन्न स्थानीय भाषाओ का विकास हुआ।
4. संतो के लेखन एवं गीतो से, ब्रज भाषा, खड़ी बोली राजस्थानी, गुजराती, बंगाली आदि को भाषागत रूप और विकसि

Scanned with OKEN Scanner

करने का अवसर मिला।

सूफी आंदोलन → इस्लामिक ग्रंथो मे "तसव्वुफ" का उल्लेख होता है। जबकि सूफी शब्द की उत्पति के विषय मे कई मत है।

Ist पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति को "सफा" कहते है और उसके द्वारा जिन विचारो को फैलाया गया। उसे सूफी कहा गया।

IInd सफा पहाड़ी के विचारो को जिन लोगो ने फैलाय। वो सूफी कहलाये।

IIIrd भेड़ के ऊन को सफा कहा जाता है जो लोग इसे धारण करते थे वो सूफी कहलाये। भेड़ के ऊन के बने मोटे कपड़े सांकेतिक रूप से भौतिकवादी जीवन जीने वाले लोगो के खिलाफ एक आंदोलन था

सूफी मत से संबंधित विशेषताएँ :

1. सूफी आंदोलन से संबंधित संत रहस्यवादी थे। उन्होने धर्म के बाह्य आडम्बरो को नकारा है। खुदा के प्रति प्रेम और भक्ति की बात कही।
2. सूफी संत सभी मनुष्यो के लिए उदार एवं दया की भावना रखते थे।
3. सूफी ईश्वर एक है के मत के समर्थक थे। इसके बाहर कुछ भी नहीं।
4. सूफी संत कुरान के मूल आधारो मे विश्वास करते थे इनका मत शरीयत नही था बल्कि तरीकत था।
5. सूफी संत प्रेम के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करने पर बल देते थे।
6. सूफी संत विशेषरूप से फना को अपने जीवन का अभ्यास मानते थे।
7. सूफी संत के लिखे गद्य साहित्य "मलफ़ुजात" नाम से जाने जाते है।

↳आइन-ए-अकबरी मे अब्बुल फजल ने 14 सूफी सिलसिले का वर्णन किया है। इन सूफी सिलसिलो मे महत्वपूर्ण है:-
चिश्ती, कादरिया, फिरदोसी, नक्शबंदी, सुहारावदी Etc.

↳ये सूफी संत समाज मे समन्वय, भाईचारा और एकता स्थापित करने का प्रयास करते थे।

↳सूफी संतो ने अलग-2 स्थानो पर अपने खानकाह बनाये थे। इन खानकाहो मे समा (संगीत) का आयोजन होता था। यही परिवर्तित होते-होते कव्वाली रूप मे स्थापित हो गया।

Q. भक्ति आंदोलन एवं सूफी आंदोलन किन अर्थो मे समान उद्देश्य के माने जा सकते है।

Q. सूफी मत के अर्थ को रेखांकित करते हुए भारतीय समाज पर इसके प्रभाव को स्पष्ट करे।

पं. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित पन सोशियल वेलफेयर एण्ड एजूकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-mail info.bidevanda@yahoo.com

भारतीय संगीत कला

संगीत मानव के अंतर्भावनाओ की सरलता के साथ एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है। भारतीय संगीत की उत्पत्ति वेदो से मानी जाती है। 4 वेदो मे सामवेद संगीत का स्रोत ग्रंथ एवं उत्पति ग्रंथ है।

संगीत, कला की एक प्रकार की आध्यात्मिकता है।

• राग गायन के लिए एक विशिष्ट अंग माना जाता है। कम से कम 5 या अधिकतम 7 स्वरो की वह रचना जो कर्णप्रिय हो उसे राग के नाम से जाना जाता है।

स्वर		देवता	ध्वनि
1.	सा	अग्नि	मोर
2.	रे	ब्रह्म	गाय, बैल
3.	गा	सरस्वती	बकरा
4.	म	विष्णु	क्रौंच पक्षी
5.	पा	लक्ष्मी	कोयल
6.	ध	गणेश	घोड़ा
7.	नि	सूर्य	हाथी

राग के लक्षण →

1. कर्णप्रिय होना चाहिए, स्वर के समायोजन से अधिक आनंद प्रिय बनाया जा सकता है।
2. प्रत्येक राग में "म" एवं "प" मे कम से कम एक स्वर अवश्य रहना चाहिए। दोनो एक साथ वर्जित नहीं है।
3. प्रत्येक राग मे आरोह एवं अवरोह / वादी एवं संवादी आदि आवश्यक माने गए है।
4. प्रत्येक राग को किसी न किसी थाट से उत्पन्न माना गया है जैसे राग भूपाली को कल्याणी थाट से उत्पन्न माना है। वर्तमान मे 10 थाट V.N. भातखंडे के अनुसार ...

संगीत के प्रकार :-

भारतीय संगीत मुख्यत २ भागो मे विभाजित की जाती है

1. कर्नाटक संगीत 2. हिन्दुस्तानी संगीत

1. कर्नाटक संगीत

पाठम एवं जवाली कर्नाटक संगीत की प्रमुख शैलियाँ है मुलतः ये प्रेम प्रधान गीत है। दोनो नृत्य के रूप मे प्रयुक्त किए जाते है।

पाठम प्रकृति का राग है। यह कलात्मक दृष्टि से आधारित एवं विदेशी भी माना जाता है।

जवाली भी प्रेम गीत है। यह मानवीय प्रेम के प्रत्यक्ष विवरण को दर्शाता है।

तिल्लाना → कर्नाटक संगीत के तिल्लाना उत्तर भारत मे प्रचलित तराना का प्रतिरूप माना जाता है

उत्तर भारत मे प्रचलित तराना की मुख्य विशेषता भक्ति भावना पूर्ण गायन को प्रस्तुत करना होता है।

इसी के स्वरूप मे परिवर्तन के कारण बंगाल मे कीर्तन M.H. मे अभंग प्रचलित हुआ।

२ हिन्दुस्तानी संगीत

घराना :- घराना हिन्दुस्तानी संगीत की महत्वपूर्ण विशेषता है जिसके माध्यम से एक तरह से संगीतकारो ने एक विशेष वर्ग का निर्माण कर लिया है।

(A) ग्वालियर घराना :- सर्वाधिक प्राचीन घराना ख्याल गायकी का जन्मदाता इसे ही माना जाता है। मुख्य विशेषता खुली आवाज गायन है।

(B) आगरा घराना :- इसे रंगीला घराना नाम से भी जाता है Bcs इस घराने मे गायन बाहुत मधुर रूप मे किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

(C) बनारस घराना → बनारस घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध घरानो मे गिना जाता है यह घराना गायन एवं वादन दोनो कलाओ टु प्रसिद्ध रहा है इस घराने के लोग ख्याल गायकी केलिए विशेष रुप से जाने जाते है।

(D) जयपुर घराना → इस घराने की गायकी मे गीत की बंदिश छोटी होती है। यही 20वी सदी मे बहुत प्रसिद्ध हुआ

हिन्दुस्तानी शैली की प्रमुख गायन विधियाँ :

(A) ध्रुपद :- ध्रुपद का निर्माण 2 शब्दो के मेल से होता है ध्रुव + पद अर्थात गाने की वह शैली जिसमे स्वर एवं राग के नियमो की शुद्धता पर सर्वाधिक बल दिया जाता है इसीलिए ध्रुपद की व्याख्या ध्रुव के समान अटल राग से लगाया जाता है।
इसके जनक स्वामी हरिदास को माना जाता है।
↓
शिष्य < तानसेन
बैजू बावरा
वर्तमान समय मे डांगर बंधु प्रसिद्ध है!

(B) ख्याल :- यह स्वर प्रधान गायन शैली है। ख्याल गाने से पूर्व आलाप नही लिया जाता
ख्याल का अर्थ है - कल्पना अर्थात विभिन्न प्रकार की शब्द रचना के माध्यम से अपने भाव प्रकट करना।
अमीर खुसरो को ख्याल गायकी का जनक माना जाता है

(C) धमार :- इस गायन विधा का उल्लेख संगीत शिरोमणि नामक ग्रंथ मे मिलता है।
धमार का गायन होली अवसर पर किया जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

इसकी भाषा मे ब्रज भाषा की प्रधानता है इस शैली के गायक मे श्रृंगार रस पर विशेष बल दिया जाता है। यह पखावज बजा कर गाने की परम्परा रही है।

(D) ठुमरी :- यह अर्ध शास्त्रीय संगीत की गायन विधा है ठुमरी मे श्रृंगार युक्त रचना की जाती है जिसमे शब्दो को भाव एवं कल्पना शीलता से गाते है प्रसिद्ध गायिका राजकुमारी है।

(E) दप्पा :- पंजाब के पहाड़ी भागो मे इस गायन का प्रयोग किया जाता है।
यह अवध दरबार मे ठुमरी के साथ विकसित हुआ यह हिन्दी मिश्रित पंजाबी भाषा का श्रृंगार प्रधान गीत है।
यह एक जटिल गायन शैली है

लोक संगीत :-

भारत मे लोक संगीत की विकसित एवं समृद्ध परंपरा रही है। भारत का ग्रामीण जीवन संगीत के रूप मे लोकसंगीत मे ही बसता है। यह मात्र मनोरंजन का साधन ही नही है बल्कि भारतीय ग्रामीण जन जीवन को प्रस्तुत करने का सबसे उच्चतम माध्यम है।

लोक संगीत मे प्रमुख विषय फसल की कटाई से संबंधित त्योहार के आगमन एवं उससे जुड़े उल्लास से संबंधित संस्कार के गीत, ऋतु परिवर्तन के गीत, देवी देवताओ के गीत आदि शामिल किए जाते है।

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय नृत्य कला

- नृत्य की उत्पति के विषय मे यह मान्यता है कि भारत की प्राचिनतम कला मे नृत्य कला को भी माना जाता है जिसे भगवान शिव से उत्पन्न माना गया है।
- जब मानव अपने हृदय के आवेग को अपने अंग-प्रत्यंग की सहायता से अभिव्यक्त करता है तो इसे नृत्य कला कहा जाता है।
- प्राचिन भारत मे सिंधु घाटी सभ्यता से कांसे की नृतकी नृत्य के प्राचिनतम प्रमाण को प्रस्तुत करती है।
- भारत के अलग-2 क्षेत्रो मे नृत्य की कुई शास्त्रीय परंपराएँ अनवरत समाज का अभिन्न अंग बने हुए है।
उत्तरी भारत के शास्त्रीय नृत्य को संरक्षण अवध के नवाब (वाजिद अली शाह) ने दिया था वह स्वयं कत्थक करते थे।

कत्थक :- इस नृत्य मे पद संचालन, आकर्षक मुद्राओ का सुंदर समन्वय शामिल होता है।
कत्थक मे विविध भाव भंगीमाओ तथा हस्त संचालन से प्रदर्शित किया जाता है। कत्थक नृत्य के 2 प्रमुख अंग है

a) तांडव
- भगवान शिव ने वीर एवं रौद्र रस प्रधान नृत्य किया था जिसे तांडव नाम से जाना जाता है।
- भगवान शिव के द्वारा किए जाने के कारण इसे 'शिव तांडव नाम दिया गया

b) लास्य
ऐसा माना जाता है कि जब त्रिपुरासुर राक्षस का वध करके भगवान शिव को आनंदित करने के लिए पार्वती जी ने शृंगार रस प्रधान जो नृत्य किया था उसे लास्य नृत्य कहा गया।
भगवान रास मंडल का आरंभ किया जो लास्य को प्रस्तुत करने की एक पद्धति है

~~भरतनाट्यम~~

आधुनिक काल मे कत्थक को पुनर्जिवित करने एवं सम्मानजनक स्थिति मे लाने मे (मेनका) का विशेष योगदान है। 1938 मे मेनका ने कत्थक का प्रशिक्षण देने के लिए खंडाला (M.H.) मे एक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। वर्तमान मे कत्थक नृत्य से संबंधित महत्वपुर्ण व्यक्तियो मे बृजु महाराज का नाम प्रसिद्ध है

Q. भारतीय नृत्य कला की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है। कत्थक नृत्य की विशेषताओं को विवेचित करे।

भरतनाट्यम

यह भी एक प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है जिसे विशेष रुप से T.N. मे किया जाता है। इस को पहले सादिर नाम से जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह नृत्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र पर आधारित है।

- यह मूल रुप से मंदिर मे किया जाने वाला नृत्य है।
- इस नृत्य से भगवान को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है।
- इस नृत्य शैली मे कविता, संगीत, नृत्य एवं इनका सुंदर समन्वय होता है।
- Types :- A) अलारिपु → यह स्तुति नृत्य है इसमे नृतक अपने आराध्य की आराधना करके नृत्य का प्रारंभ करता है।

B) जातीस्वरम् → इसमे नृत्य करने वाला अपने कला के ज्ञान का परिचय देता है इसमे अंग तथा मुद्राओ का प्रदर्शन स्वर तथा ताल के माध्यम से किया जाता है।

C) शब्दम् → इसे भरतनाट्यम का सबसे आकर्षक अंग माना जाता है। इसमे काव्य द्वारा ईश्वर की आराधना की जाती है।

d) वरणम् → इसमे नृत्य तथा वृत्त का सुंदर मिश्रण होता है।

e) पदम् → यह तमिल, तेलगू या संस्कृत भाषा मे होने वाली वंदना है जो 7 पंक्ति युक्त होती है।

Imp.
f) तिल्लाना → यह नृत्य का अंतिम अंग माना जाता है इसमे घुंघरूओ द्वारा तीव्र लय युक्त नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। प्रमुख – गोपी कृष्ण

कथकली → यह नृत्य केरल से संबंधित प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है इसका प्रचलन मालाबार क्षेत्र के साथ-2 कर्नाटक मे भी है। यह 2 शब्दो से मिलकर बना है - कथ + कली जिसमे कथ का अर्थ है (कथा) जबकि कली शब्द का अर्थ है (नाटक)। यह केरल के मंदिरो मे विकसित हुआ। कुछ विद्वानो का मानना है कि यह राज दरबार से भी संबंधित था।

- यह पुरुष प्रधान नृत्य है। इसमे स्त्री पात्र के नृत्य को ही पुरुष द्वारा संपन्न कराया जाता है।
- इसमे रामायण, महाभारत के प्रसंगो का वर्णन किया जाता है।
- पार्श्व गायन से कथाओ का वर्णन चलता रहा है।
- कथकली के गीत मलयालम मे होते है।

ओडिशी ÷ ओड़िशा के इस प्राचीन नृत्य के विषय मे सर्वप्रथम प्रमाण हाथीगुफा अभिलेख से मिलता है। यह नृत्य शैली ओड़रा नृत्य पर आधारित है। बाद मे चलकर इस नृत्य पर वैष्णववाद का प्रभाव पड़ा।

- ओड़िशी नृत्य भगवान जगन्नाथ को समर्पित है।
- इसमे आध्यात्मिकता का विशेष प्रभाव होता है।

Scanned with OKEN Scanner

- इसमे मुख्य रूप से 3 प्रकार की भंगीमाएँ होती है :
  1. मस्तक
  2. पृष्ठ भाग
  3. स्थिर मुद्राएँ
- यह नृत्य भरत नाट्यम से बहुत मिलता जुलता प्रतीत होता है।
- इस नृत्य की दौरान मृदंग, मंजिरा, बांसुरी, हार्मोनियम का विशेष प्रयोग होता है।
- केलूचरण महापात्रा मुख्य नृतक थे।

मोहिनी अट्टम :- यह केरल का नृत्य है
यह वैष्णव भक्ति परंपरा से प्रभावित है
ऐसा माना जाता है कि इस नृत्य का जनक त्रावणकोर का शासक स्वाथी तिरुनल के शासनकाल मे हुआ था
- केरल के सागर तट पर भगवान विष्णु ने ~~भगवान विष्णु ने~~ मोहिनी का रूप धारण कर यह नृत्य किया था। एवं भष्मासुर का नाश किया था।
- इस नृत्य मे कथकली व भरतनाट्यम दोनो के घेरा पाये जाते है।
- कल्याणी अम्मा, शांता राव, भारती शिवाजी प्रमुख नृतक

मणिपुरी :- यह एक मणिपुर की प्राचीन नृत्य है
यह वैष्णव धर्म की परंपरा पर आधारित है
- इस नृत्य के दौरान बांसुरी, ढोल, मृदंग, तंबुरा आदि का प्रयोग होता है।
- यह एक प्रकार की रास लिला है।
- इस शैली के प्रसिद्ध नृतको मे गुरु अमली सिंह, नलकुमार है।

Scanned with OKEN Scanner

कुचीपुड़ी

→ इस नृत्य का विशेष प्रसार आंध्र क्षेत्र में हुआ इसका प्रारंभ कुचेलपुरम गाँव से माना जाता है इसी लिए इस नृत्य का नाम कुचीपुड़ी पड़ा।

- इसकी वेशभूषा सामान्यतः भरत नाट्यम के समान होती है
- इस नृत्य में विशेष बल पर संचालन पर दिया जाता है।
- इस नृत्य को पीतल की तस्तरी पर पैर रखकर करने की परम्परा है।
- इसमे मृदंग एवं मंजिरा जैसे वाद्य यंत्र बजते है। इस नृत्य मे मुख्य आधार भागवत पुरान माना जाता है।
- इसी लिए इस नृत्य के पात्र "भागवत मेला" कहा जाता है।
- पाला सरस्वती, रागिनी देवी प्रमुख नृतक।

Scanned with OKEN Scanner

र. नं. 144/जयपुर/2008-09

मोबाइल : 9314618091

स्वामी विवेकानन्द महिला महाविद्यालय, रूपनगढ़

(संचालित पन्नू सोशियल वेलफेयर एण्ड एजुकेशन सोसायटी, जयपुर)

राई का बाग, परबतसर रोड, रूपनगढ़, अजमेर-305814

E-mail : info.bidevanda@yahoo.com

मूर्तिकला एवं चित्रकला

सैंधव कालीन मूर्तिकला :- मूर्तिकला को अन्य कला की दृष्टि से अधिक ठोस और प्रभावी अभिव्यक्ति वाला माना जाता है। भारत मे मूर्ति कला का प्रारंभ प्राचीन काल से ही मिलता है प्राचीनतम मूर्ति सिंधु घाटी सभ्यता की शहरी संस्कृति से प्राप्त हुई है। इन मूर्तियो को 3 रूपो मे बांटा जा सकता है।

- I st पाषाण मूर्तिया
- II nd धातु मूर्तिया
- III rd मिट्टी की मूर्तिया

मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा के उत्खनन से जो मूर्तिया प्राप्त हुई है। वे सब भावपुर्ण है उनमे अनुपात का विशेष ध्यान रखा गया है जिसके कारण मूर्तियो मे सुंदरता की छाप दिखाई देती है। इस काल मे देवी देवताओ की, नारी की, नृतकी की, पशु पक्षियो की मूर्तियो का निर्माण किया गया।

सैंधव कालीन मूर्तियो के निर्माण मे विभिन्न प्रकार की धातुओ जैसे चाँदी, तांबा (कॉपर) पीतल, कांसा, पत्थर मिट्टी का प्रयोग किया गया है।

मोहन जोदड़ो से प्राप्त (कांसे की नृतकी) की मूर्ति सिंधु घाटी सभ्यता के मूर्ति कला का उत्कृष्टतम प्रमाण माना जाता है।

कांसे की नृर्तकी :- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग कांसा निर्माण की तकनीक मे योग्य थे जिसका निर्माण तांबा एवं टीन के मिश्रण से होता है।

Scanned with OKEN Scanner

तांबा सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र मे उपलब्ध था। (Raj. - खेतड़ी (झुंझुनु)] जबकि टीन का आयात होता था (अफगानिस्तान) जो नृत्यकी की मूर्ति प्राप्त हुई है इसी प्रकार के कांसे की बनी है।

यह मूर्ति मोहनजोदड़ो के उत्खनन से अवशेष के रूप मे प्राप्त हुई है। यह विश्व विख्यात मूर्ति लगभग साढ़े 10 cm की है। इस मूर्ति के पैर का निचला भाग टूटा है बाकी शरीर यथावत है। नारी की मुस्कान से नृत्य की भावना प्रतित होती है।

इस मूर्ति मे अनेक विशेषताएँ देखी जा सकती है। इसमे गोल मुख, छड़ीदार शरीर, पीछे की ओर मुड़े बाल, पतली लंबी आँखे, पतला ललाट, छोटी गर्दन, गले मे पड़ा ग्रैवक इसमे 3 लॉकेट है। लंबी भुजाएँ, कंधे से लेकर कलाई तक चुड़िया, बांयी भुजा त्रिकोण बनाती है।

Que सिंधु घाटी सभ्यता मे मूर्तिकला का एक विशेष स्थान था, कांसे की नृत्यकी की कला की दृष्टि से संबंधित विशेषताओ की व्याख्या करे?

मौर्यकालीन मूर्तिकला :- कला की दृष्टि से मौर्यकाल विशेष काल के रूप मे जाना जाता है मौर्य काल मे मनुष्य नारी देवी-देवताओ, राजाओ, फूल पतियो जानवरो, पक्षियो आदि की मूर्तिया निर्मित की गई थी जो सौन्दर्य एवं आकर्षण की दृष्टि से विशेष स्थान रखती है। इन मूर्तियो मे भावो की अभिव्यक्ति सुंदरता को समंवित करने का प्रयास किया गया है। मौर्य कालीन मूर्तियो मे एक अलग चमक है। जो उस समय के पॉलिस करने के विशिष्ट तकनीक व महत्व को प्रदर्शित करता है।

मथुरा, अहिछत्र, कौशांबी, लम्बिनी, बोध गया, सारनाथ राजगृह, वैशाली, श्रावस्ती, मौर्यकालीन मूर्तिकला के केन्द्र थे। मथुरा के पास परखम मे मिली यक्ष की मूर्ति, वेसनगर की स्त्री मूर्ति, पटना व दीदारगंज की मूर्तिया विशेष उल्लेखनीय है।

मौर्य काल मे मनुष्य की आकृति कुछ विशेष प्रभाव वाली नहीं है पत्थर की घटाई भी साफ नहीं है लेकिन परखम गॉव से प्राप्त एक मुख एवं भुजा वहीन मूर्ति इस काल की मूर्तिकला का उत्कृष्ट नमूना माना जासकता है।

भूरे बलुआ पत्थर की बनी 7 फुट ऊचाई वाली इस मूर्ति पर विशेष प्रकार का लेप लगाया गया है। यह मूर्ति आज भी मथुरा संग्रालय मे सुरक्षित रखी है। वेसनगर से प्राप्त एक स्त्री की मूर्ति जो कि 6 फीट 7 इंच ऊची है जिससे मौर्य कालीन मूर्ति कला की विकसित अवस्था को समझा जा सकता है

अशोक स्तम्भ के शीर्ष पर स्थापित एकाश्म विभिन्न पशुओ की मुर्तिया कला के नवीन पक्ष की विशेषता है विशेषकर सारनाथ से प्राप्त लाट जिसमे उत्कृष्ट शिल्प कला का प्रयोग किया गया है।

गुप्त काल — नागर, बेसर, द्रविड़

मौर्योत्तर कालीन मूर्तिकला :- मुर्ति निर्माण से संबंधित 3 श्रेणियो का विकास हुआ।

1) गांधार 2) मथुरा 3) अमरावती

गांधार शैली इसमे मूर्ति निर्माण हेतु "हेलेनिष्टिक शैली" (ग्रीक / यूनानी शैली) का प्रयोग किया गया है इसमे अधिकांश मूर्तिया भगवान बुद्ध की बनाई गई है इसी लिए गांधार कला के बारे मे कहा जाता है कि शैली विदेशी है लेकिन विषय वस्तु भारतीय है।

इस शैली मे प्रारंभिक समय मे नीले - धुसरित रंग के तराशे गए पत्थरो का प्रयोग किया गया है लेकिन बाद के चरण मे चूना - मिट्टी एवं दीवारो का प्रयोग किया गया है।

इस शैली मे शारीरिक रूपरेखा पर विशेष बल दिया जाता था। विशेषकर मानवीय रूप को वास्तविक रूप से जोड़ने के लिए। प्रतिमाओ मे स्पष्ट रूप से मांसपेशियो का प्रदर्शन किया गया है जो वस्त्र दिखाये गए है उनको भी पारदर्शि रूप मे बनाये गये। बाल घुंघराले बनाये गए है जो शिल्प कारो की योग्यता को प्रदर्शित करता है

Scanned with OKEN Scanner

गांधार कला मे आध्यात्मिक दृष्टिकोण का अभाव है। कला की सहजता का अभाव है। ऐसा प्रतीत होता है कि मुर्तिया मशीनो के द्वारा बनाई गई।

गांधार कला ने समकालिन अन्य कलाओ को प्रभावित किया। गांधार

गांधार कला से संबंधित मुख्य क्षेत्र उत्तर पश्चिम क्षेत्र था जिसमे बामीयान, शाह जी की ड्योढी

मथुरा शैली - इस शैली का विकास मथुरा एवं इसके आसपास के क्षेत्रो मे हुआ इसे मुख्य संरक्षण कुषाणो द्वारा प्रदान किया गया।

मथुरा कला पर धार्मिक प्रभाव मिश्रित रूप मे दिखाई देता है इस पर बौद्ध, जैन, ब्राह्मण सभी से संबंधित विषय वस्तु मुर्ति कला के रूप मे प्रयुक्त किये गए है इस कला के द्वारा एक धर्म निरपेक्ष प्रभाव भी दृष्टि गोचर होता है। जीवन के विभिन्न पहलुओ का प्रदर्शन किया गया है। इस कला के अंतगर्त शासक वर्ग एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियो की मुर्तियो का निर्माण किया गया।

मथुरा कला मे सफेद चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है।

मथुरा कला मे प्रारंभिक समय मे अधिकांश मुर्तिया जैन तीर्थंकरो की नग्न प्रतिमाएँ बनाई गई जिसमे ऋषभदेव व पार्श्वनाथ महत्वपूर्ण है।

मथुरा कला की जो विशेषता है वह ठोस प्रकार की मुर्तियो के निर्माण से जुडी है।

Scanned with OKEN Scanner

मूर्तिया ओजस्वी बनाई गई है इन प्रतिमाओ मे काम विषयक भाव दिखता है। मथुरा शैली मे बाद मे बोधिसत्व, अर्थात बुद्ध की विभिन्न अवस्थाओ की मूर्तिया बनने लगी। ब्राह्मण धर्म से जुड़ी देवी देवताओ की प्रतिमाए बनायी गई जैसे शिव, सूर्य, बलराम विष्णु, कुबेर आदि। मथुरा कला मे कुषाण शासको की भी मूर्तिया मिली है जिसमे कनिष्क एवं विमकडफिसस प्रमुख है। मथुरा के पास मत नामक स्थान से कनिष्क की सिर वहीन मूर्ति मिली है

बुद्ध की प्रतिमाओ मे एक विशेषता दिखाई देती है कि मूर्तियो मे दांया हाथ अभय मुद्रा मे है इनका परिधान तंग है। यह जैन धर्म से प्रभावित है यहा विशेष बात यह है कि प्रतिमाओ मे केश, दाढी का अभाव है मथुरा कला मे यक्ष व यक्षिणी की मूर्तिया भी मिली है।

यक्ष → परखम
बेसनगर → स्त्री

आमरावती शैली :-

इस कला को सातवाहन और इस्वांकु वंश के शासको द्वारा संरक्षण दिया गया इसमे मूर्ति निर्माण मे मुख्य प्रभाव धर्म का है विशेष कर बौद्ध धर्म से जुड़ी मूर्तिया बनी है इस शैली मे बनी मूर्तिया नागार्जुनकोंड, अमरावती आदि क्षेत्रों से प्राप्त होती है।
अमरावती कला, स्तूप के रूप मे दिखाई देती है।

→ गुप्तकालीन मूर्तिकला ←

- गुप्तकाल भारतीय संस्कृति के इतिहास मे स्वर्णयुग का द्योतक माना जाता है।
- कला के अन्य विधाओ के साथ-2 मूर्तिकला भी महत्वपूर्ण थी
- गुप्तकालिन मूर्तिकारो ने कुषाण काल एवं पूर्व मध्य काल के बीच संतुलन स्थापित किया है।
- गुप्तकाल के शासको के संरक्षण मे भागवत धर्म का महत्वपूर्ण विकास हुआ। इन लोगो ने अन्य धर्मो को भी संरक्षण प्रदान किया। इस काल मे विष्णु, शिव, सूर्य स्कंद, गणेश, कुबेर, लक्ष्मी, पार्वती, दुर्गा के साथ-2 बुद्ध एवं जैन धर्म से संबंधित मूर्तियो का निर्माण किया गया
- गुप्त काल मे 3 कला केन्द्रो का विकास हुआ :-
  1. मथुरा 2. सारनाथ 3. पाटलीपुत्र
- गुप्तकाल मे मूर्तियो के निर्माण मे नग्नता पूर्णरूप से समाप्त हो गई। शारीरिक आकर्षण को छिपाने के लिए गुप्त कलाकारो ने वस्त्रो का प्रयोग किया है। जिसे बुद्ध की मूर्तियो मे देखा जा सकता है।
- भगवान शिव की पूजा कुषाण काल मे लिंग के रूप मे होती थी लेकिन गुप्त कालीन कलाकारो ने भगवान शिव के अर्द्धनारीश्वर रूप की रचना की।

Scanned with OKEN Scanner

चोल मूर्तिकला

नटराज - चैल के राफनवाड़ी गुफा की मूर्ति से पता चलता है कि यह चालुक्यो के द्वारा बनवायी गई थी परंतु चोल शासको के काल मे चरम पर पहुँची।

मूर्ति की विशेषताएँ -

- ऊपरी दाहिने हाथ मे डमरू है जो कि सृजन की ध्वनि का प्रतीक है। संसार की सभी कृतियाँ डमरू की महान ध्वनि से सृजित हुई है।
- ऊपरी बाएँ हाथ मे शाश्वत अग्नि है जो विनाश का प्रतीक है। विनाश सृष्टि का अग्रगामी है तथा सृजन का अपरिहार्य प्रतिरूप है।
- निचला दाहिना हाथ अभय मुद्रा मे है जो आशिर्वाद दर्शाता है और भक्तो के लिए अभयता का भाव आश्वस्त करता है।
- निचला बाया हाथ उठे हुए पैर की तरफ इशारा करता है और मोक्ष के मार्ग को दर्शाता है।
- शिव तांडव नृत्य एक छोटे बौने की आकृति के ऊपर कर रहे हैं बौना अज्ञानता, और एक अज्ञानी व्यक्ति के अहंकार का प्रतीक है।
- शिव की उलझी और हवा मे लहराती जटाएँ गंगा नदी के प्रवाह की प्रतीक है।
- श्रृंगार मे शिव के एक कान मे पुरुष की बाली दूसरे मे महिला की बाली है। यह पुरुष और महिला के विलय का प्रतीक है और इसे अकसर अर्द्ध नारीश्वर रूप मे जाना जाता है।
- शिव की बांह के चारो ओर एक सांप लटका है जो कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक जो रीढ़ की हड्डी मे निष्क्रिय है अगर इसे जगाया जाए तो मनुष्य सच्ची चेतना को प्राप्त कर सकता है